21 Points On Purity

Based on

AM 18.12.16

1. पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है।

2. पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है।

3. जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वास चलना आवश्यक है।

श्वास नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वास है 'पवित्रता'।

4. 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउण्डेशन पवित्रता है।

5. आत्मा अर्थात् बच्चे और बाप से मिलन का आधार **'पवित्र बुद्धि'** है।

6. सर्व संगमयुगी प्राप्तियों का आधार 'पवित्रता'है।

7. पवित्रता, पूज्य-पद पाने का आधार है।

8.ब्राह्मणों की लाइफ ही 'पवित्रता' है।

9. ब्राह्मण जीवन का जीय-दान ही पवित्रता है।

10.आदि- अनादि स्वरूप ही पवित्रता है।

11. पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है।

12.पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है।

13. पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आँखों की रोशनी है।

14.पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है।

15. पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है।

16. लेकिन यह पवित्रता तो आपके जीवन का वरदान है, इसमें मेहनत और हठ क्यों?

17. अपनी निजी वस्तु है। अपनी चीज को अपनाने में मेहनत क्यों? पराई चीज को अपनाने में मेहनत होती है। पराई चीज अपवित्रता है, न कि पवित्रता। रावण पराया है, अपना नहीं है। बाप अपना है, रावण पराया है।

18. तो बाप का वरदान पवित्रता है रावण का श्राप अपवित्रता है। तो रावण पराये की चीज को क्यों अपनाते हो? पराई चीज अच्छी लगती है? अपनी चीज पर नशा होता है।

19. तो सदा

स्व-स्वरूप पवित्र है,

स्वधर्म पवित्रता है अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है।

स्वदेश पवित्र देश है।

स्वराज्य पवित्र राज्य है।

स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है।

कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है,

- बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठयोग से छूट जायेंगे। बापदादा बच्चों को मेहनत करते हुए नहीं देख सकते, इसलिए हो ही सब पवित्र आत्मायें।

20. स्वमान में स्थित हो जाओ। स्वमान क्या है? - **"मैं परम पवित्र आत्मा हूँ।"** सदा अपने इस स्वमान के आसन पर स्थित होकर हर कर्म करो। तो सहज वरदानी हो जायेंगे। यह सहज आसन है। तो सदा पवित्रता की झलक और फलक में रहो।

स्वमान के आगे देह अभिमान आ नहीं सकता।

21.लवलीन आत्मा बनो, **सदा एक बाप दूसरा न कोई**, - यही नैचरल प्युरिटी है।

तो यह गीत गाना नहीं आता है? यही गीत गाना सहज पवित्र आत्मा बनना है।